14 (HIN–3) 3·5

2018

HINDI

Paper : 3·5

(Prayojanmulak Hindi)

(New Syllabus)

Full Marks : 64

Time : Three hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions.

1. ***किन्हीं दो*** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 12×2=24

(क) संविधान के विभिन्न अनुच्छेदों में निहित राजभाषा-संबंधी प्रावधानों को स्पष्ट कीजिए।

(ख) राजभाषा और राष्ट्रभाषा से आप क्या समझते हैं? दोनों में क्या अंतर पाए जाते हैं?

(ग) विदेशों में हिन्दी की कैसी स्थिति है? इस स्थिति को और अधिक मजबूत करने के लिए अपना परामर्श दीजिए।

2. ***किन्हीं दो*** के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए नमूना प्रस्तुत कीजिए : 10×2=20

(क) सरकारी पत्र

(ख) परिपत्र

(ग) ज्ञापन

(घ) टिप्पण

3. निम्नलिखित में से ***किन्हीं पाँच*** के हिन्दी पर्याय लिखिए : 2×5=10

Savings Account, Transfer, Verified and found correct, With reference to your letter, General Manager, Fund, Account, Dispatch.

4. सही शीर्षक देकर संक्षेपेण कीजिए : 1+9=10

इस देश में बहुत-सी आर्येतर जातियाँ अत्यंत सभ्य और संस्कृत जीवन व्यतीत करती थीं, बहुत-सी ऐसी भी थीं जिनके आचार-विचार में जंगलीपन का प्राधान्य था। संघर्ष में पड़कर आर्यों को दोनों प्रकार की जातियों से प्रभावित होना पड़ा। उनके साहित्य, शिल्प और आचार-विचार में ये प्रभाव अत्यंत स्पष्ट हैं। आर्यों के पश्चात् भी अनेक जातियाँ यहाँ आई हैं। कुछ ने आर्यों के धर्म-विश्वास को कुछ अंशों में स्वीकार किया है।

कुछ ने दूर तक उसे प्रभावित किया और कुछ ऐसी भी आई हैं, जो आर्यों के साथ एकदम नहीं मिल सकी हैं, फिर भी एक जगह रहने के कारण परस्पर प्रभावित हुई हैं। इन्हीं नाना जातियों का मिलन क्षेत्र यह भारतवर्ष है।

अथवा

भारतवर्ष का साहित्य बड़ा विशाल और विपुल है। उसने ज्ञान और साधना के क्षेत्र में नाना भाव से विचार किया है। मैं सबकी चर्चा करने योग्य अधिकारी भी नहीं हूँ और यहाँ इतना समय भी नहीं है; परंतु इतना स्मरण कर लेना उचित है कि यह जो आध्यात्मिक परमसत्य की उपलब्धि है और जिसके लिए शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक संयम और वैराग्य की बात बताई गई है — सिर्फ यही एकमात्र काम्य नहीं बताया गया। यद्यपि यह परमोत्तम लक्ष्य है, पर इस लक्ष्य की पूर्ति के पहले प्रत्येक व्यक्ति को कुछ ऋण चुका लेने पड़ते हैं। बहुत थोड़े लोगों को इन ऋणों से छुटकारा दिया गया है। अधिकांश लोग इन ऋणों को चुकाए बिना किसी भी बड़ी साधना के अधिकारी नहीं हो सकते।